



हमारे नए निदेशक

डॉ. विष्णुवर्धन रेड्डी ने दिनांक 03 अगस्त, 2016 को भाकृअनुप-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में निदेशक के रूप में कार्यभार सम्भाला। डॉ. रेड्डी ने आंध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद से आनुवंशिकी और पादप प्रजनन में पीएच. डी. की डिग्री प्राप्त की। 25 वर्षों की सेवा के दौरान, उन्होंने तिलहनो, दलहनो, बाजरा, चावल और बीज अनुसंधान/उत्पादन आदि विभिन्न क्षमताओं में कार्य किया। इन्होंने भाकृअनुप में वैज्ञानिक के रूप में 1992-2007, प्रधान वैज्ञानिक (तिलहन), निदेशक (बीज) और निदेशक (चावल) ANGRAU में 2007 से 02.08.2016 तक कार्य किया। उन्होंने ग्यारह संकर/प्रजातियों अर्थात् पीसीएच-111 और पीसीएच-222 (अरंडी), एपीसीएच-66 और एन डी एस एच 1012 (सूरजमुखी), वाईएलएम-66 (तिल), टीएसएफ-1 (कुसुम), बालाजी (जेटरोफा), आरएनआर-15048 (चावल), पीबीएच-3 (बाजरा), टीबीजी-104 (काले चने) और आरजीटी-1 (अरहर) को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके अलावा सूरजमुखी की 216 विविध इनब्रेड्स, 45 नरब्धय लाईनस और 63 आर लाईस भी विकसित की। इन्होंने आंध्र प्रदेश में जैव ईंधन अनुसंधान के लिए नोडल अधिकारी (2007-2012) के रूप में कार्य किया। इसके अलावा नौ अभिभावक लाइनों का एनबीपीजीआर के साथ पंजीकरण में भी योगदान दिया है। इन्होंने एएनजीआरएयु, जेएनटीयु और बीएचयु के कुल 39 पीएच. डी. और एम.एससी. (एजी) के छात्रों को निर्देशित किया है। इन्होंने 126 शोध लेख रेफरी पत्रिकाओं में, 24 पुस्तक अध्याय, 9 पुस्तकें, 47 लोकप्रिय लेख और विभिन्न सम्मेलनों में 39 पत्र प्रस्तुत किए। आपने कुल अनुदान 915.80 लाख रुपये के साथ 14 अनुसंधान परियोजनाओं को संचालित किया है।

डॉ. रेड्डी को कई पुरस्कार और सम्मान उनके उत्कृष्ट शैक्षिक और अनुसंधान में योगदान के लिए मिले हैं, जिनमें 1993 के दौरान भाकृअनुप से फसल सुधार में पीएच. डी. कार्य के लिए प्रतिष्ठित जवाहरलाल नेहरू अवार्ड शामिल हैं, 2008 में आंध्र प्रदेश वैज्ञानिक पुरस्कार, 2012 में सीड्समैन एसोसिएशन वार्षिक पुरस्कार, 2012 में विश्व तेलुगू सम्मेलन पुरस्कार, 2015 में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पुरस्कार, और 2014 में नीलकंठपुरम कावेरपा गोल्ड मेडल ANGRAU द्वारा सर्वश्रेष्ठ कृषि अनुसंधान वैज्ञानिक पुरस्कार और चौधरी देवी लाल

MEET OUR NEW DIRECTOR

Dr. A. Vishnuvardhan Reddy joined as Director of the Institute on August 03, 2016. Dr. Reddy holds Ph.D. degree in Genetics and Plant Breeding from Andhra Pradesh Agricultural University, Hyderabad. During his 25 years of service, he has worked in various capacities in oilseeds, pulses, millets, rice and seed research/production. He worked as Scientist at ICAR during 1992-2007, Principal Scientist (Oilseeds), Director (Seeds) and Director (Rice) at ANGRAU during 2007 to 02.08.2016. He was instrumental in developing eleven hybrids/varieties namely PCH-111 and PCH-222 (Castor), APSH-66 and NDSH-1012 (Sunflower), YLM-66 (Sesame), TSF-1(Safflower), Balaji (Jatropha), RNR-15048 (Rice), PBH-3 (Pearl millet), TBG-104 (Black gram) and RGT-1(Red gram) and also developed 216 diverse inbreds, 45 "CMS" lines and 63 "R" lines of sunflower. He served as a Nodal Officer for Biofuel Research in Andhra Pradesh (2007-2012). He has also contributed for registration of nine parental lines with NBPGR. He has guided 39 Ph.D. and M. Sc.(Ag) students of ANGRAU, JNTU and BHU. He has authored 126 research articles in refereed journals, 24 book chapters, 9 books, 47 popular articles and presented 39 papers in various conferences. He has handled 14 research projects with a total grant of Rs. 915.80 lakhs.



Dr. Reddy has received several awards and recognitions for his excellent academic and research contributions, which include the prestigious Jawaharlal Nehru Award for Ph.D. work in Crop Improvement from ICAR during 1993, Andhra Pradesh Scientist Award in 2008, Seedsmen Association Annual Award in 2012, World Telugu Conference Award in 2012, Distinguished Scientist Award in 2015 and Neelakantapuram Kaverappa Gold Medal for Best Agricultural Research by ANGRAU in 2014 and also associated with the Chaudhary Devi Lal Outstanding AICRP (Castor)

सर्वश्रेष्ठ एआईसीआरपी (अरंडी) पुरस्कार डीओआर को 2005 में भाकृअनुप द्वारा प्राप्त, 2009-10 के लिए सर्वश्रेष्ठ एआईसीआरपी (अरंड) केन्द्र आरएआरएस पालम, और भाकृअनुप 2014 के सर्वश्रेष्ठ कृषि-NSP (फसलों) पुरस्कार के साथ भी जुड़े, 2012-13 के दौरान डॉ. रेड्डी ने समीक्षा समिति पुरस्कार, PPV & FRA के लिए मौके पर सत्यापन के लिए समीक्षा समिति के एक सदस्य के रूप में सेवा की है। डॉ. रेड्डी भारतीय तिलहन अनुसंधान सोसाइटी (आईएसओआर) और छह वैज्ञानिक सोसाइटी में आजीवन सदस्य है। इन्होंने (2004-2006) आईएसओआर, हैदराबाद के महासचिव के रूप तथा तिलहन अनुसंधान जर्नल के संपादक के रूप में 2001 से 2007 सेवा की। वर्तमान में वह आंध्र प्रदेश चैप्टर आनुवंशिकी और पादप प्रजनन सोसाइटी के उपाध्यक्ष है।

डॉ. रेड्डी को आईआईओआर ने निदेशक बनने पर बधाई और उनके सफल कार्यकाल की शुभकामनाएं दी।

आईआईओआर स्थापना दिवस

संस्थान का स्थापना दिवस 01 अगस्त, 2016 को मनाया गया। पूर्वाह्न में डॉ.

ए. अहमद फिरोज, एम डी, केयर अस्पताल, हैदराबाद ने मधुमेह-एक परिदृश्य पर व्याख्यान दिया। डॉ. बी. वेंकटेश्वरु, कुलपति, वी एन एम के वी, परभणी ने स्थापना



दिवस व्याख्यान जलवायु परिवर्तन और भारतीय कृषि:तिलहनी फसलों पर प्रभाव और अपनाने की रणनीति पर दिया। डॉ. वी. प्रवीण राव, कुलपति, पीजेटीएसएयु, हैदराबाद ने समारोह की अध्यक्षता की। इस समारोह में आईआईओआर के पूर्व निदेशक, सेवानिवृत्त स्टॉफ सदस्य तथा स्थानीय संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर भाकृअनुप-आईआईओआर के निम्न स्टॉफ सदस्यों को अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत किया गया।

Award of ICAR received by DOR in 2005, the Best AICRP (Castor) Centre Award received by RARS, Palem for 2009-10 and the best AICRP-NSP (Crops) Award of ICAR 2014. Dr. Reddy has also served as a member of review committee for the on-spot verification for plant genome savior community award, PPV & FRA during 2012-13. He is a fellow of Indian Society of Oilseeds Research (ISOR) and a life member in six scientific societies. He has served as the General Secretary of ISOR, Hyderabad (2004-2006), Editor of Journal of Oilseeds Research (2001-2007). Currently, he is serving as Vice-President, A.P. Chapter of Genetics and Plant Breeding Society.

IIOR congratulates Dr. Reddy and wishes him a successful tenure.

IIOR Foundation Day

IIOR Foundation Day was celebrated on 01 August, 2016. A lecture on "An Overview of Diabetes" was delivered by



Dr. A. Ahmed Firoz, MD, Care Hospital, Banjara Hills, Hyderabad during the forenoon. The Foundation Day Lecture on "Climate Change and Indian Agriculture:

Impacts and adaptation strategy in oilseed crops" was delivered by Dr. B. Venkateshwarlu, Vice Chancellor, VNMKV, Parbhani. Dr. V. Praveen Rao, Vice Chancellor, PJTSAU, Hyderabad presided over the function. The former Directors and retired staff members of IIOR and representatives of local Institutes also attended the celebrations. On this occasion, the following staff of ICAR - IIOR were given the awards for their excellent work in the relevant field.

श्रेष्ठ अनुसंधान लेख अवार्ड Best Research Paper Award	1. बी. उषा किरण, एन. मुक्ता, पी. कदिरवेल, के. अलिवेलु, एस. सेंथिलवेल, पी. किशोर और के. एस. वरप्रसाद को उनके लेख जेनेटिक डायवर्सिटी ऑफ सॉफ्लावर जर्मप्लाजम एज रिजिल्ड बाई एसएसआर मार्कर” 1. B. Usha Kiran, N. Mukta, P. Kadirvel, K. Alivelu, S. Senthilvel, P. Kishore and K. S. Varaprasad for the paper entitled “Genetic diversity of safflower germplasm as revealed by SSR markers”, & 2. प्रद्युम्न यादव और आईवाईएलएन मूर्ति को उनके लेख “केलिब्रेशन ऑफ एनएमआर स्पेक्ट्रोस्कोपी फॉर एक्युरेट इस्टीमेशन ऑफ ऑयल कंटेंट इन सनफ्लावर, सॉफ्लावर और कैस्टर सीड्स” 2. Praduman Yadav and I.Y.L.N. Murthy for the paper entitled “Calibration of NMR spectroscopy for accurate estimation of oil content in sunflower, safflower and castor seeds”
श्रेष्ठ कार्मिक (तकनीकी) Best Worker (Technical)	श्री. एल. कृपाकर, तकनीकी अधिकारी (टी-5) / Mr. L. Krupakar, Tech. Officer (T-5)
श्रेष्ठ कार्मिक (प्रशासन) / Best Worker (Administration)	सु श्री. विजयलक्ष्मी भूषण, सहायक / Ms. J. Vijayalakshmi Bhushan, Assistant
श्रेष्ठ कार्मिक (कुशलता सहायक सेवा) Best Worker (Skilled Supporting Staff)	श्री. डी. बालय्या, एसएसएस / Sri D. Balaiah, SSS
श्रेष्ठ कार्मिक (अस्थायी श्रमिक) Best Worker (Temporary Status Labour)	नरकोडा फार्म :- श्रीमती एम. वेंकटम्मा और श्री. बी. रमेश; राजेंद्रनगर फार्म – श्रीमती जी. पेटम्मा Narkhoda Farm :- Mrs. M. Venkatamma & Mr. B. Ramesh; Rajendranagar Farm :- Mrs. G. Pentamma

कुसुम और अलसी की वार्षिक समूह बैठक 2016

कुसुम और अलसी की वार्षिक समूह बैठक का आयोजन सितंबर, 2-4, 2016 के दौरान कृषि कॉलेज, वीएनएमकेवी, परभणी में 2015-16 के दौरान किए गए शोध के परिणामों की समीक्षा करने के लिए किया गया। वर्ष 2016-17 के लिए कुसुम और अलसी की उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए रणनीति बनाई। बैठक के तहत एआईसीआरपी (कुसुम), एआईसीआरपी (अलसी) पर काम कर रहे वैज्ञानिक, केंद्रीय और राज्य कृषि विभाग के अधिकारी, सार्वजनिक और निजी बीज उद्यमियों और मेजबान विश्वविद्यालयों ने भाग लिया। सत्र की शुरुआत, डॉ. डी. पी. वासकर, निदेशक अनुसंधान, के

स्वागत भाषण से हुई। मुख्य अतिथि डॉ. जे. एस. संघू, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) ने पीसी यूनिट, कानपुर द्वारा तैयार किये गये एक



प्रकाशन “अलसी में खरपतवार प्रबंधन” जारी किया। डॉ० ए. विष्णुवर्धन रेड्डी निदेशक, भाकूअनुप-आईआईओआर ने एआईसीआरपी (कुसुम) की अनुसंधान उपलब्धियों को प्रस्तुत किया और डॉ. पी. के. सिंह, परियोजना समन्वयक, अलसी ने अलसी की अनुसंधान उपलब्धियों पर प्रकाश डाला उन्होंने वर्षाधारित, सिंचित और उतेरा परिस्थितियों के तहत IVT और AVT प्रविष्टियों के मूल्यांकन में की गई प्रगति, कली मक्खी के लिए प्रतिरोध और उच्च तापमान सहनशीलता के लिए जर्मप्लाज्म का मूल्यांकन और चूर्णिल आसिता के प्रबंधन के लिए सल्फर की प्रभावकारिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने फाइबर के मूल्य श्रृंखला/के साथ फाइबर पर हाल ही में पहल KNHMPI, जयपुर और CIRCOT, मुंबई प्रस्तुति के दौरान समझाया गया। डॉ. बी. बी. सिंह, सहा. महानिदेशक (ओ.पी.) ने कहा कि कम अवधि में तैयार होने वाली किस्में/संकरों के विकास पर जोर दिया जाना चाहिए और विविधीकरण को और भी तेज किया जाना चाहिए। उन्होंने आग्रह किया कि फसल प्रबंधन तकनीकों और बीज उत्पादन को अधिक किसान अनुकूल बनाने को अनुसंधान में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मुख्य अतिथि, डॉ. जे. एस. संघू, उप-महानिदेशक (सीएस) ने कुसुम और अलसी की जलवायु लचीली प्रकृति के लाभ को भुनाने पर जोर दिया। उन्होंने सलाह दी कि फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए किसानों कि मांग के अनुसार अनुसंधान करे। अध्यक्ष, डॉ. बी. वेंकटेश्वरु, कुलपति, वीएनएमकेवी, ने वस्तु की मांग के अनुसार अनुसंधान एजेंडा होने पर बल दिया जैसे अलसी में फाइबर। इस दिशा में, उन्होंने आग्रह किया कि पीपीपी मोड में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकता के लिए देश में वैश्विक गुणवत्ता लीनेन के निर्माण के लिए पता लगाया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि कुसुम फसल में हाई विंटेज वैल्यू हाल के वर्षों में कम नमी के संदर्भ में है।

Annual Group Meeting of Safflower and Linseed, 2016

The Annual Group Meeting of Safflower & Linseed was held at College of Agriculture, VNMKV, Parbhani during September 2-4, 2016 to review the results of research conducted under AICRP (Safflower) & AICRP (Linseed) during 2015-16 and formulate the strategies to increase the production and productivity of these crops during 2016-17. The meeting was attended by the scientists working under concerned AICRPs, officials of Central and State Departments of Agriculture, Public and Private Seed Entrepreneurs and host University. The inaugural session commenced with the welcome address



by Director of Research Dr. D.P. Waskar, VNMKV,. The Chief Guest Dr. J.S. Sandhu, DDG (CS) released a publication on “Weed Management in Linseed”

brought out by the PC Unit, Kanpur. This was followed by a detailed presentation of the research highlights in safflower by Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, ICAR-IIOR. The research highlights on Linseed were presented by Dr. P.K. Singh, Project Co-ordinator (Linseed). He highlighted the progress made in evaluation of IVT and AVT entries under rainfed, irrigated and utera conditions, evaluation of germplasm for resistance to bud fly and tolerance to high temperature and efficacy of sulphur for management of powdery mildew. He also explained about recent initiatives on the value chain/addition of the fibre with KNHMPI, Jaipur and CIRCOT, Mumbai. Dr B.B. Singh, ADG (O&P) opined that emphasis should be given for development of short duration varieties/hybrids and diversification should be further intensified. He urged that crop management technologies and seed production should be high on the research priority to make it more farmer friendly. The Chief Guest, Dr J.S. Sandhu, DDG (CS) emphasized on encashing the advantage on the climate resilient nature of safflower and linseed. He advised that demand driven research that is acceptable to the farmers will be the key driver for increasing the productivity of these crops. The Chairman, Dr. B. Venkateswarulu, Vice-Chancellor, VNMKV, emphasized that the research agenda should be in accordance with the demand for the commodity i.e., fibre in linseed. In this direction, he urged that Private Public Partnership (PPP) mode should be explored for creation of global quality linen in the country for meeting the national and international requirement. He opined that safflower crop has high vintage value in the context of reduced moisture regimes in the recent years.

कुसुम के लिए प्रमुख सिफारिशें

- सिंचित कुसुम उगाने वाले क्षेत्रों के लिए एनएआरआई-96 किस्म की पहचान की गई है।
- कुसुम में फाइटोफथोरा डेम्पिंग-आफ और सीड्लिंग ब्लाइट के प्रभावी और आर्थिक प्रबंधन के लिए और अधिक बीज उपज प्राप्त करने के लिए, बुवाई से पूर्व कुसुम के बीजों को साइमोजेनील 8% + मॅन्कोजेब 64% @ 2ग्राम/किलो अथवा केप्टान 50% डब्ल्यू @ 3 ग्राम/किलो अथवा ट्राईकोड्रमा हार्जियन्म Th4d SC @ 1 एमएल/किलो कि दर से बीज उपचार करें। साइमोजेनील 8% + मॅन्कोजेब 64% @ 2 ग्राम/किलो अथवा केप्टान 50% डब्ल्यू @ 3 ग्राम/किलो अथवा ट्राईकोड्रमा हार्जियन्म Th4d SC @ 1 एमएल/किलो से बी : सी अनुपात क्रमशः 1.29, 1.22 और 1.05 मिला।
- मृदा जनित रोगों जैसे अल्ट्रेनेरिया पत्ती धब्बा, फ्यूजेरियम विल्ट और फाइटोफथोरा डेम्पिंग-आफ और सीड्लिंग ब्लाइट के प्रभावी और आर्थिक प्रबंधन के लिए और अधिक बीज उपज प्राप्त करने के लिए, बुवाई से पूर्व कुसुम के बीजों को साइमोजेनील 8% + मॅन्कोजेब 64% @ 2 ग्राम/किलो अथवा कार्बेन्डाजिम 12% + मॅन्कोजेब 63% @ 2ग्राम/किलो अथवा ट्राईकोड्रमा हार्जियन्म Th4d SC @ 1एमएल/किलो अथवा केप्टान 50% डब्ल्यू @ 3ग्राम/किलो कि दर से बीज उपचार करें। साइमोजेनील 8% + मॅन्कोजेब 64%, कार्बेन्डाजिम 12% + मॅन्कोजेब 63% और ट्राईकोड्रमा हार्जियन्म Th4d SC उपचार से बी : सी अनुपात क्रमशः 1.32, 1.27 और 1.12 मिला।
- 100% फास्फोरस का महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में और कर्नाटक के उत्तरी संक्रमण क्षेत्र में मृग-कुसुम प्रणाली की उत्पादकता बनाए रखने के लिए या तो मृग या कुसुम के साथ पीएसबी+ 5 टन गोबर की खाद/हैक्टर एक विकल्प है। 50% फास्फोरस का महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में मृग-कुसुम प्रणाली की उत्पादकता बनाए रखने के लिए या तो मृग के साथ पीएसबी और कुसुम के साथ 100% एनपी एक विकल्प है।
- कर्नाटक के उत्तरी संक्रमण क्षेत्र में मृग-कुसुम प्रणाली की उत्पादकता बनाए रखने के लिए दोनों फसलों में अकार्बनिक स्रोत के माध्यम से 100% एनपी उपयोग कर सकते हैं।
- नए कीटनाशकों, थायोमिथोक्जेम 25 डब्ल्यू @125 ग्राम/हैक्टर, एसीटामाप्रिड 20 एसपी @100 ग्राम/हैक्टर और क्लोथीनिडीन 50 डब्ल्यूडीजी @10 मिली/हैक्टर फफूंदनाशी (कार्बेन्डाजिम 12% + मॅन्कोजेब 63%) 75 डब्ल्यू किसी भी पादप आविषालुता, शारीरिक परिवर्तन और कुसुम में उनकी प्रभावकारिता में परिवर्तन के बिना साथ संगत रहे।

गाजर घास जागरूकता सप्ताह

भाकृअनुप-आईआईओआर में “गाजर घास जागरूकता सप्ताह” महानिदेशक भाकृअनुप की अपील के अनुसार और निदेशक, भाकृअनुप-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर की मदद से अगस्त 16-22, 2016 तक मनाया गया। द्विभाषीय बैनर और पोस्टर और स्थानीय भाषा तेलुगू, में संदेश आईआईओआर कार्यालय और राजेंद्रनगर और नरखोडा फार्म के परिसर में प्रदर्शित किए गए। ‘गाजर घास जागरूकता अभियान’ के दौरान दिनांक 19 अगस्त, 2016 को आईआईओआर के सभी कर्मचारियों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों,

Major Recommendations for Safflower

- The variety NARI-96 was identified for irrigated safflower growing areas.
- For effective and economical management of Phytophthora damping-off and seedling blight of safflower and getting higher seed yield, it is recommended to treat the safflower seed before sowing with cymoxanil 8% + mancozeb 64% @ 2 g/kg or captan 50% WP @ 3 g/kg or *Trichoderma harzianum* Th4d SC @ 1 ml/kg. The B:C ratios of 1.29, 1.22 and 1.05 are obtained with cymoxanil 8% + mancozeb 64%, captan and *Trichoderma harzianum* Th4d SC treatments, respectively.
- For effective and economical management of the seed/soil borne diseases of safflower like *Alternaria* leaf spot, *Fusarium* wilt and Phytophthora damping-off and seedling blight and getting higher seed yield, it is recommended to treat the safflower seed before sowing with cymoxanil 8% + mancozeb 64% @ 2 g/kg or carbendazim 12% + mancozeb 63% @ 2 g/kg or *Trichoderma harzianum* Th4d SC @ 2 ml/kg or captan 50 WP @ 3 g/kg. The B:C ratios of 1.32, 1.27 and 1.12 are obtained with cymoxanil 8% + mancozeb 64%, carbendazim 12% + mancozeb 63% and *Trichoderma harzianum* Th4d SC treatments, respectively.
- Substitute 100% P of either green gram or safflower with PSB + 5 t FYM/ha for sustaining green gram-safflower system productivity in Vidarbha region of Maharashtra and northern transition zone of Karnataka. Substitute 50% P of green gram with PSB and 100% NP to safflower for sustaining green gram-safflower system productivity in Vidarbha region of Maharashtra.
- Apply 100% NP of both the crops in green gram-safflower system through inorganic source for sustaining green gram-safflower system productivity in Northern Transition zone of Karnataka.
- Newer insecticides, thiomethoxam 25 WG @ 125 g/ha, acetamiprid 20 SP @ 100 g/ha and clothianidin 50 WDG @ 10ml/ha were compatible with the fungicide (carbendazim 12% + mancozeb 63%) 75 WP without any phytotoxicity, physical changes and alteration in their efficacy in safflower.

Parthenium Awareness Week

ICAR-IIOR observed “Parthenium Awareness Week” from August 16-22, 2016 as per the direction of Director General ICAR facilitated by Director, ICAR-Directorate of Weed Research, Jabalpur. Bi-lingual banners and posters and messages in local language *Telugu*, were displayed in the premises of IIOR office and farms at Rajendranagar and Narkhoda. A ‘Parthenium Awareness Campaign’ was organized on 19 August, 2016 with enthusiastic participation of all the staff of IIOR including scientists, officers, technical and supporting staff, RAs, SRFs,

तकनीकी और समर्थक स्टाफ, आरए, एसआरएफ और छात्रों ने भाग लिया। डॉ. एस. एन. सुधाकर बाबू, प्रधान वैज्ञानिक (शस्य विज्ञान) ने गाजर घास सप्ताह की शुरुआत आवास, स्वास्थ्य खतरों, फसल उत्पादकता और जैव विविधता की चुनौती, भौतिक, रासायनिक और जैविक विधियों सहित प्रबंधन पर चर्चा की। उन्होंने गाजर घास के खतरों से सावधान रहने की जरूरत और इसे स्वयं और समाज की भलाई के लिए समाप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करने कि सभी से अपील की। आईआईओआर नरखोड़ा फार्म पर मजदूरों के लिए पोस्टर और नारे के द्वारा गाजर घास के खिलाफ प्रदर्शन के साथ साथ एक जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इसके बाद आईआईओआर के परिसर से गाजर घास को पहचान करना और निकालने के लिए सभी कर्मचारियों द्वारा खेत स्काउटिंग किया गया। निदेशक ने गाजर घास हटाने की गतिविधि में भाग लेने के अलावा आईआईओआर स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए गाजर घास सप्ताह के बाद भी सभी संसाधनों को एकल कर परिसर को स्वच्छ रखने की सलाह दी। राजेंद्रनगर फार्म पर गाजर घास से उच्च गुणवत्ता की खाद के उत्पादन के अवसर आरंभ करने और इस विशेष अभियान की निरंतरता को समायोजित करने के लिए किया गया।



फ्रील्ड आईआरसी

खरीफ खेत आईआरसी का आयोजन सितंबर 12, 2016 को नरकोड़ा में खेत परीक्षणों की समीक्षा के लिए किया गया। डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी, निदेशक, आईआईओआर एवं अध्यक्ष, आईआरसी ने खरीफ खेत परीक्षणों की मॉनिटरिंग की। आईआईओआर के सभी वैज्ञानिकों ने फ्रील्ड विजिट में भाग लिया तथा नरकोड़ा फ्रील्ड परीक्षण करने वाले वैज्ञानिकों ने परीक्षण मूल्यांकन हेतु विवरण दिया।

रबी आईआरसी

डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी, निदेशक, आईआईओआर की अध्यक्षता में रबी-आईआरसी बैठक 23-24 सितंबर, 2016 तक आयोजित की गई। इस आईआरसी में रबी 2015 के दौरान परियोजनाओं के अनुसंधान परिणाम उनके प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर्स द्वारा प्रस्तुत किए गए इनकी समीक्षा की गई। बाहर से निधि प्राप्त परियोजनाओं की प्रगति से समिति को अवगत कराया गया।

students and others. Dr S.N. Sudhakara Babu, Principal Scientist (Agronomy) gave a talk on Parthenium dwelling on its introduction, spread, health hazards, crop productivity and biodiversity threats, management including physical, chemical and biological methods. He appealed to everyone to be wary of the dangers of Parthenium and make every effort to eradicate it for the good of self and society. An awareness campaign was organized for farm workers at IIOR-Narkhoda farm along with the display of posters and slogans against Parthenium. This was followed by scouting the farm by all the staff to identify and remove Parthenium from the premises of IIOR. The Director, IIOR besides participating in Parthenium removal activity, advised to pool up the resources weekly, exclusively for this common clean cultivation beyond Parthenium control drive at IIOR farms and premises in strengthening the "Swacch Bharat" programme. The composting facility at Rajendranagar farm was expanded to accommodate continuation of this special drive to turn the threat of Parthenium into an opportunity for producing high quality compost.



Field IRC

Field IRC

Kharif field IRC was conducted at Narkhoda farm on 12 September, 2016 to review the progress of the field experiments. Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, IIOR & Chairman, IRC monitored the kharif field experiments. All scientists of IIOR participated in the field visit and scientists conducting the field trials at Narkhoda farm explained experiments for an appraisal.

Rabi-IRC

Rabi-IRC meeting was held during 23-24 September, 2016 under the Chairmanship of Dr. A. Vishnuvardhan Reddy, Director, IIOR. In this IRC, the research results of the projects conducted during rabi, 2015 were presented by the Principal Investigators of the respective projects which were reviewed. Progress made under all the externally funded projects was presented to the house.

प्रशिक्षण / TRAINING

उच्च ओलिक कुसुम खेती के पहलुओं पर फील्ड स्तर के अधिकारियों का क्षमता निर्माण

भाकृअनुप-आईआईओआर और मैरीको लिमिटेड द्वारा प्रायोजित फील्ड स्तर के अधिकारियों की क्षमता निर्माण हेतु “उच्च ओलिक कुसुम फसल प्रबंधन” पर एक-दो दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम भाकृअनुप-आईआईओआर, हैदराबाद में 23-24 अगस्त, 2016 को आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. के. अंजनी और डॉ. प्रद्युम्न यादव, प्रमुख व सह-प्रमुख जांचकर्ताओं मैरीको परियोजना वित्त पोषित ‘भारतीय परिस्थितियों के लिए उच्च ओलिक कुसुम जीनोटाइप्स का विकास’ और कुसुम में उच्च ओलिक विशेषता के लिए मार्कर चयन की सहायता के लिए प्रोटोकॉल पर आयोजित कि गई थी। प्रशिक्षण में 10 गणमान्य व्यक्ति मैरीको लिमिटेड से और 44 फील्ड स्तर अधिकारी आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और तेलंगाना से उपस्थित थे। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान पद्धतियों, रोग और कीट प्रबंधन और पाइप लाइन ओलिक कुसुम किस्मों का बीज उत्पादन सहित सांस्कृतिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया।



Capacity Building of Field Level Officers on Cultivation Aspects of High Oleic Safflower

A two-day ICAR-IIOR and MARICO Ltd. sponsored training programme on “High Oleic Safflower Crop Management” for capacity building of field level officers was conducted at IIOR, Hyderabad during 23-24 August, 2016. The course directors of the training programme were Dr. K. Anjani and Dr. Praduman Yadav, Principal and Co-Principal Investigators of Marico funded project on “Development of high oleic safflower genotypes for

Indian conditions and development of protocols for marker-assisted selection for high oleic trait in safflower”. The training was attended by 10 dignitaries from Marico Ltd. and 44 field level officers from Andhra Pradesh, Chhattisgarh, Gujarat, Karnataka, Maharashtra, Madhya Pradesh and Telangana. The training was focused on cultural aspects including agronomic practices, disease and insect management and seed production of the pipe-line oleic safflower varieties.

मानव संसाधन विकास / Human Resource Development

निम्न प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशालाओं/सेमिनार/सम्मेलन/बैठकों में भाग लिया

Participation in Training Programmes/Workshops/Seminars/Conferences/Meetings etc.

नाम / Name	कार्यक्रम / Programme	स्थल / Venue	दिनांक / Date
डॉ. पी. दुरईमुरुगन Dr. P. Duraimurugan	सतत उत्पादकता और पौष्टिकता सुरक्षा हेतु कृषि विज्ञान और खाद्य प्रौद्योगिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन International Conference on “Agricultural Sciences and Food Technologies for Sustainable Productivity and Nutritional Security”	यूपएस, बेंगलुरु UAS, Bangalore	25-27 अगस्त, 2016 25-27 August, 2016
डॉ. ए. विष्णुवर्धन रेड्डी Dr. A. Vishnuvardhan Reddy	नेतृत्व विकास पर कार्यपालक विकास कार्यक्रम Executive Development Programme on “Leadership Development”	नार्म, हैदराबाद NAARM, Hyderabad	27 अगस्त-01 सितंबर, 2016 27 August-01 September, 2016
डॉ. पी. दुरईमुरुगन Dr. P. Duraimurugan	सूक्ष्म जीवविज्ञान, कृषि एवं पर्यावरण विज्ञान 2016 पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन International Conference on “Microbiology, Agriculture & Environmental Sciences-2016”	सेंट पॉयस पी.जी. कॉलेज फॉर विमेन, नाचारम, हैदराबाद St. Pious P.G College for Women, Nacharam, Hyderabad	01-02 सितंबर, 2016 01-02 September, 2016
श्री जी. रघुनाथ Shri G. Raghunath	कृषि - कृषिकोष ज्ञान के विस्तार के लिए संस्थानीय ज्ञान भण्डार टूल Workshop on “KrishiKosh - An Institutional Repository Tool for Dissemination of Agriculture Knowledge”	पीजेटीएसएयू, हैदराबाद PJTSAU, Hyderabad	29 सितंबर, 2016 29 September, 2016
डॉ. एम. लक्ष्मीनारायण Dr. M. Lakshminarayana	भाकृअनुप कृषि फसलों की बीज परियोजना, बीज उत्पादन पर XI वार्षिक समीक्षा बैठक XI Annual Review Meeting of “ICAR Seed Project, Seed Production in Agricultural Crops”	जीबीपीयुएटी, पंतनगर GBPUAT, Pantnagar	17-18 अगस्त, 2016 17-18 August, 2016

Invited Lectures

- Dr. P. S. Vimala Devi, Principal Scientist (Agril. Entomology) delivered a lecture on “*Bacillus thuringiensis*” (Bt) for management of Lepidopteran Pests” on 26 August, 2016 to participants of the training programme on “Advances in eco-friendly pest management strategies in millets” (22-31 August, 2016) organized by IIMR, Hyderabad.
- Dr. P. S. Vimala Devi, Principal Scientist (Agril. Entomology) delivered a lecture on “Mass production of entomopathogenic fungi and quality” on 01 September, 2016 to the participants of the training programme on “Production Protocol for Bio-agents and Biopesticides and Quality Assessment & Quality Management of Biopesticides” (18.08.2016-07.09.2016) organized by NIPHM, Hyderabad.

Personnel

Promotions

1. Dr. G. D. Satish Kumar, Senior Scientist (Agril. Extension) was promoted to Principal Scientist w.e.f. 30 November, 2014.
2. Sri B. Giri was given financial up-gradation under IInd MACP as UDC w.e.f. 02 March, 2016.

Retirement

Sri J. Balaram, Senior Technician, retired from ICAR-IIOR service on superannuation on 31 August, 2016. The Director and staff of IIOR wished him a very happy and prosperous, healthy and peaceful retired life.



हिन्दी पखवाड़ा समारोह

संस्थान में 14-28 सितंबर, 2016 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे स्मरण शक्ति, शब्दानुवाद, एक मिनट, श्रुतलेख और सामान्य ज्ञान का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारियों एवं स्टॉफ सदस्यों ने भाग लिया।

पखवाड़े का समापन समारोह 30 सितंबर, 2016 को डॉ. आईवाईएलएन मूर्ति, प्रभारी निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। समारोह का आरंभ डॉ. मुक्ता, प्रधान वैज्ञानिक एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के स्वागत से हुआ। तत्पश्चात मुक्ता जी ने राजभाषा रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि कैसे नियमित रूप से कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। समय से प्रगति रिपोर्ट भेजी जा रही है। कार्यान्वयन समिति की बैठके समय पर आयोजित की जा रही है तथा लिए गए निर्णयों को



कार्यान्वित किया जा रहा है। संस्थान में राजभाषा प्रोत्साहन योजना चलाई जा रही है जिसमें कर्मचारी काफी उत्साह से भाग ले रहे हैं। पखवाड़े के दौरान आयोजित राजभाषा कार्यशाला की संक्षिप्त रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई।

इसके पश्चात निदेशक महोदय डॉ. मूर्ति ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं में नगद पुरस्कारों का वितरण किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में आपने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है। हिन्दी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है।

राजभाषा का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है। उन्होंने सभी से फाइलों पर प्रतिदिन कुछ टिप्पणियाँ हिन्दी में करने का आग्रह किया।

श्री. प्रदीप सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा) के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

The standalone mobile application on “Oilseeds at a glance” is an initiative to reach wider section of the stakeholders through ICT from IIOR.

This App is the result of a collaborative effort of ICAR-IIOR and C-DAC, provides a comprehensive information about nine oilseed crops viz., groundnut, rapeseed and mustard, soybean, sunflower, safflower, sesame, niger, castor and linseed. There are six sections for each crop - crop information, released varieties and hybrids, state-wise preferred varieties and hybrids, AICRP centres contact information, ICAR seed Project centres dealing with oilseed crops and mandis / selling markets for each state. In crop information section the user can have access to information on crop particulars such as scientific name, local names, major growing states, climate, duration, sowing season, seed rate, seed treatment, spacing, crops suitable for intercropping, irrigation, recommended dose of fertilisers (RDF), major diseases and pests, harvesting, yield, cost of cultivation, Minimum Support Prices (MSP) etc.



मोबाईल अप्लिकेशन “ऑयलसीड्स एट ए ग्लान्स” Mobile Application “Oilseeds at a glance”

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.cdac.oilseedsglance&hl=en>

तिलहन पर एक स्टैंडअलोन मोबाइल एप्लिकेशन आईआईओआर से आईसीटी के माध्यम से हितधारकों के व्यापक सेक्शन तक पहुंचने के लिए एक पहल है। यह एप आईसीएआर-आईआईओआर और सी-डीएसी के सहयोगी प्रयासों का परिणाम है, 9 तिलहन फसलों जैसे मूंगफली, रेपसीड और सरसों, सोयाबीन, सूरजमुखी, कुसुम, तिल, रामतिल, अरंड और अलसी के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करता है। प्रत्येक फसल के लिए छः अनुभाग हैं - फसल की जानकारी, जारी किए गए किस्म और संकर, राज्यवार वरीयता वाले किस्म और संकर, एआईसीआरपी केंद्र संपर्क जानकारी, आईसीएआर बीज

परियोजना प्रत्येक राज्य के लिए तेल बीजों और मंडियों / बिक्री वाले बाजारों के साथ काम कर रहे हैं। फसल की जानकारी अनुभाग में उपयोगकर्ता के पास फसल विवरणों जैसे कि वैज्ञानिक नाम, स्थानीय नाम, प्रमुख उगाने वाले राज्य, जलवायु, अवधि, बुवाई के मौसम, बीज दर, बीज उपचार, पौधों के बीच अंतर, सिंचाई, उर्वरक (आरडीएफ) कि सिफारिश की गई मात्रा, उर्वरक, प्रमुख बीमारियों और कीट, कटाई, उपज, खेती की लागत, एमएसपी आदि कि उपयुक्त फसलों पर जानकारी प्राप्त हो सकती है।

Editors : Dr. P.S. Vimala Devi,
Dr. P. Kadirvel, Dr. Md. A. Aziz Qureshi,
Mr. Pradeep Singh & Dr. H.P. Meena
Compiled by : Mr. V. Sambasiva Rao & Mr. G. Chandraiah
Photo Credits : Mr. B.V. Rao
Published by : **Dr. A. Vishnu Vardhan Reddy**
on behalf of the
ICAR-Indian Institute of Oilseeds Research,
Rajendranagar, Hyderabad-500 030
Web site: <http://www.icar-iior.org.in>
E-mail: director.iior@icar.gov.in
Fax: (+91) 040-24017969
Phone: (040) 24015222

Printed Matter / Book - Post



हर कदम, हर उमर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agr@search with a human touch